हिन्दी साहित्य में किसान

सपने, संघर्ष और चुनौतियाँ 21वीं सदी

संपादक डॉ. राम किंकर पाण्डेय

हिन्दी साहित्य में किसान सपने, संघर्ष और चुनौतियाँ 21वीं सदी

संपादक डॉ. राम किंकर पाण्डेय

Scanned by CamScanner

वैधानिक चेतावनी

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित आलेख विविध लेखकों के हैं, पुस्तक में आलेख शामिल करने के लिए संपादक से वैचारिक मेल आवश्यक नहीं है। सभी विचारों – अवधारणाओं के लिए आलेख लेखक ही जिम्मेदार हैं। किसी भी विवाद की स्थिति के लिए सम्पादक जिम्मेदार नहीं होगा। पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन – फोटो कॉपी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए सम्पादक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय चिरमिरी ही मान्य होगा।

ISBN : 978-93-80845-67-8

अनंग प्रकाशन

ई- मेल : anangprakashan@gmail.com

फोन नं0 09350563707

सर्वाधिकार : संपादक

प्रथम संस्करण : 2016

मूल्य : 495 रुपये

अनंग प्रकाशन, बी- 107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली- 110053, शब्द- संयोजन : पीकेएस इंटरप्राइजेज, दिल्ली- 110053, मुद्रक : राजोरिया प्रिन्टर्स, दिल्ली- 94 से मुद्रित।

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

भूमिका : धरती और किसान का अटूट रिश्ता है! 7–10

1. आखिर क्यों किसी किसान को नहीं मिलता भारत-रत्न? 15–28
डॉ. विनोद विश्वकर्मा

2. उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और विश्वग्राम बनाम भारतीय किसान 29–34
डॉ. रामकिंकर पाण्डेय

3. आदिवासी किसानों में भूमि हस्तांतरण और भूमिहीनता की समस्या तथा हिन्दी उपन्यास 35–40
डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

4. भारतीय किसान मामा के गाँव का गोबर हो गया 41–49
डॉ. रावेन्द्र कुमार साहू

5. स्वतन्त्र भारत: विकास की संकल्पना और किसान 50–55
डॉ. विनीता पाण्डेय

6. ईक्कीसवीं सदी की चुनौतियाँ और भारतीय किसान 56–61
प्रदीप विश्वकर्मा

7. भूमण्डलीकरण, भारतीय किसान और हिन्दी साहित्य 62–67
डॉ. हरदीप कौर

8. समकालीन कविता में किसान चेतना : जीवन और समय की केन्द्रीय अंतर्धारा 68–78
डॉ. लक्ष्मीकान्त चंदेला

9. 'प्रेमचन्द किसान-संघर्ष के प्रामाणिक प्रहरी 79–83
प्रो. कल्पना तिवारी

10. फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों में अभिव्यक्त किसानों की मूल समस्या 84–88
डॉ. आर.एन. धुर्वे

11. हिन्दी साहित्य में भारतीय किसान और नागार्जुन के साहित्य में कृषक जीवन 89–94
डॉ. अमित शुक्ल

Scanned by CamScanner

आदिवासी किसानों में भूमि हस्तांतरण और भूमिहीनता की समस्या तथा हिन्दी उपन्यास

डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

भारत एक विशाल देश है। सन 2011 की जनगणना के अनुसार हमारे देश की जनसंख्या 1.21 अरब है, जो कि चीन के बाद विश्व में सर्वाधिक है। अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा विविधताओं के कारण भारत की सभ्यता संसार की एक प्राचीन सभ्यता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था में जनजातियों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। ''भारत में जनजातियों की आबादी अफ्रीका के बाद दुनिया में सर्वाधिक है।''[1] ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये लोग भारतीय प्रायद्वीप के मूल निवासी हैं। मूल निवासी होने के कारण ही इन्हें सामान्यतया 'आदिवासी' कहा जाता है। ''हमारे देश में करीब 550 जनजातियाँ हैं।''[2] सन 2011 की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या 10.42 करोड़ है, जो कि देश की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत है।

शताब्दियों से आदिवासी समाज अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा है। औपनिवेशिक युग में शोषकों की एक पूरी फौज ने उनका सामाजिक - आर्थिक शोषण किया और तात्कालीन सरकार ने उनके अलगाव की नीति जारी रखी। देश की स्वतंत्रता के बाद हालांकि तमाम सरकारों ने उन्हें मुख्य धारा में लाने के प्रयास किये हैं, लेकिन इसके बावजूद अभी भी वे शोषण, घुटन और अलगाव से पीड़ित हैं और अपने अस्तित्व के लिये संघर्ष कर रहे हैं।

भारत की अधिकांश जनजातियाँ आज भी विभिन्न आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त हैं। आर्थिक विघटन और विखंडन लगभग सभी जनजातीय समुदायों में दृष्टिगोचर होता है। कई स्थितियों में इन समस्याओं का रूप बड़ा गंभीर है। अधिकतर जनजातियाँ प्राकृतिक आवास एवं भूमि से बेदखली के भय और काश्तकारी असुरक्षा के माहौल में जी रही हैं। साथ ही, गैर जनजातीय लोगों के साथ संपर्क के फलस्वरूप कर्ज, भूमि हस्तांतरण और भूमिहीनता जैसी समस्याएँ भी पैदा हुई हैं। भूमि हस्तांतरण और भूमिहीनता की समस्याएँ एक-दूसरे से जुड़ी

Scanned by CamScanner

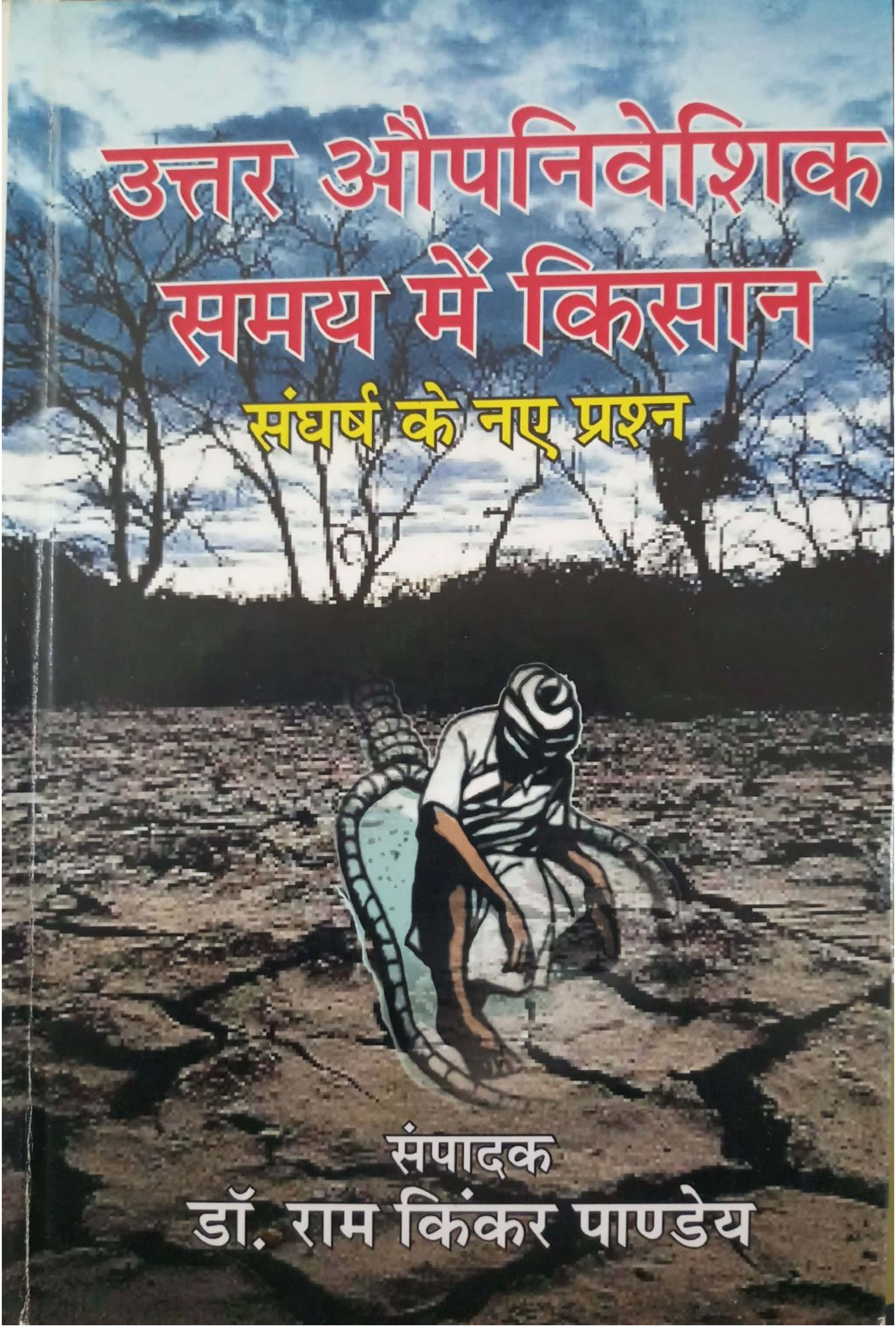

उत्तर औपनिवेशिक समय में किसान

संघर्ष के नए प्रश्न

संपादक
डॉ. राम किंकर पाण्डेय

Scanned by CamScanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
बी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 011-22911223
ईमेल: jtspublications@gmail.com

© **सं.डॉ.राम किंकर पाण्डेय**

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN 978-93-85833-10-6

मूल्य :**895** रुपये

वैधानिक चेतावनी :
प्रस्तुत पुस्तक में संकलित आलेख विविध लेखकों के हैं, पुस्तक में आलेख शामिल करने के लिए संपादक से वैचारिक मेल आवश्यक नही है। सभी विचारों - अवधारणाओं के लिए आलेख लेखक ही जिम्मेदार हैं। किसी भी विवाद की स्थिति के लिए सम्पादक, प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा। पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन-फोटो कापी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए सम्पादक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय चिरमिरी ही मान्य होगा।

आवरण सज्जा : राजीव कुमार शर्मा, दिल्ली - 53

शब्द-संयोजन : पंकज कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : विशाल कौशिक प्रिन्टर्स, दिल्ली

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

अपनी बात x

डॉ. राम किंकर पाण्डेय

1. साहित्यिक परिदृश्य से गायब होता किसान : प्रश्न सभ्यता के मानक का 05

प्रो. भागवत प्रसाद दुबे

2. स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय राजनीति में किसान की जगह 11

डॉ० आरती तिवारी

3. धुरी पर किसान 16

प्रो० मुकुल रंजन गोयल,

डॉ० छाया जैन

4. 'फाँस'- उत्तर - आधुनिक किसान जीवन का महाकाव्य 20

डॉ० विनोद विश्वकर्मा

5. जनजातीय समाज में ऋणग्रस्तता की समस्या और हिन्दी उपन्यास 35

डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

6. हिन्दी कविता में किसान विमर्श 43

डॉ. पुनीत बिसारिया

7. उदारीकरण एवं भारतीय किसान 51

कु. रजनी सेठिया

8. खेती किसानी का भविष्य और भारतीय किसान 61

डॉ. श्रीमती आस्था तिवारी

9. नगरीय एवं ग्रामीण जीवन की साझा समस्याओं पर एक अन्तर्दृष्टि 67

डॉ. रामभूषण तिवारी

10. किसान जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक पहलू और उनका भोजन छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में 73

डॉ. श्रीमती सरोजबाला श्याग विश्नोई

11. कृषक विमर्श और कथाकार मार्कण्डेय 80

डॉ. मलखान सिंह

Scanned by CamScanner

5

जनजातीय समाज में ऋणग्रस्तता की समस्या और हिन्दी उपन्यास

डॉ. उमेश कुमार पाण्डेय

जनजातीय समाज भारतीय संस्कृति का बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। इतनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत होने के बावजूद न्यायपूर्ण व्यवस्था न होने के कारण आदिवासी समाज विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है। इन समस्याओं का स्वरूप गंभीर होने के साथ-साथ आदिवासियों के लिए बहुत मारक रहा है। भारत की अधिकांश जनजातियाँ आज भी विभिन्न आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त हैं। आर्थिक विघटन और विखंडन लगभग सभी जनजातीय समुदायों में दृष्टिगोचर होता है। कई स्थितियों में इन समस्याओं का रूप बड़ा गंभीर है। अधिकतर जनजातियाँ प्राकृतिक आवास एवं भूमि से बेदखली के भय और काश्तकारी असुरक्षा के माहौल में जी रही हैं। साथ ही, गैर जनजातीय लोगों के साथ संपर्क के फलस्वरूप कर्ज, भूमि हस्तांतरण और भूमिहीनता जैसी समस्याएँ भी पैदा हुई हैं। जमींदार एवं सरकारी अधिकारी भी बेगारी के रूप में इनका शोषण करते रहे हैं। ऋणग्रस्तता की समस्या कदाचित् जनजातियों में पायी जाने वाली सबसे गंभीर समस्या है। हालांकि इस समस्या का संबंध भारत के संपूर्ण सामान्य जनजीवन से है, लेकिन जनजातियों में इसका रूप बहुत अधिक व्यापक और गंभीर है। व्यावहारिक रूप में अधिकांश जनजातियों को इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिन जनजातियों की आर्थिक स्थिति कुछ संतोषप्रद है, उनमें भी एक बड़ी संख्या ऋणों के बोझ से दबी हुई है। ध्यान देने की बात है कि

Scanned by CamScanner